तीन पत्ती गुलाब-13

“पता नहीं उसने अपने प्रथम शारीरिक मिलन को लेकर कितने हसीन ख्वाब देखे होंगे ? क्या वो इतनी जल्दबाजी में पूरे हो पाते ? सम्भोग या चुदाई तो प्रेम की अंतिम अभिव्यक्ति है. …”

Story By: prem guru (premguru2u)
Posted: Sunday, August 18th, 2019
Categories: जवान लड़की
Online version: तीन पत्ती गुलाब-13

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

तीन पत्ती गुलाब-13

मेरे प्यारे पाठको और पाठिकाओ !
एक शेर मुलाहिजा फरमाएं :

वो हमारे सपनों में आये और स्वप्नदोष हो गया।
उनकी इज्जत रह गई और हमारा काम हो गया।

मैं जानता हूँ मेरे पप्पू के चुनाव हार जाने और शीघ्र वीरगति को प्राप्त होने का समाचार सुनकर आपको बहुत गहरा सदमा लगा होगा।

आप लोगों ने कामुक कहानियों में अक्सर पढ़ा होगा कि ऐसी स्थिति में नायिका या प्रेमिका सेक्स के लिए तुरंत राजी हो जाती है और फिर नायक अपनी प्रेमिका के साथ घंटों सम्भोग करता है। और दोनों की पूर्ण संतुष्टि के बाद ही सारा ड्रामा ख़त्म होता है।

पर दोस्तो ! ये सब बातें केवल किस्से-कहानियों में ही संभव होती हैं। वास्तविक जीवन में यह सब इतना जल्दी और आसान नहीं होता।

खैर आप निराश ना हों। आप सभी तो बड़े अनुभवी और गुणी है और यह भी जानते हैं कि 'मेरा पप्पू जब एक बार कमिटमेंट कर लेता है तो फिर वह अपने आप की भी नहीं सुनता।' पर सयाने कहते हैं वक़्त से पहले और मुक्कदर से ज्यादा कभी नहीं मिलता। बस थोड़ा सा इंतजार और हौसला रखिये शीघ्र ही आपको खुशखबरी मिलेगी।

वैसे देखा जाए तो एक तरह से यह सब अच्छा ही हुआ। आप को हैरानी हो रही है ना ? मैं समझाता हूँ। गौरी उस समय उत्तेजना के उच्चतम शिखर पर पहुंची अपना सब कुछ लुटाने के लिए मेरे आगोश में लिपटी थी।

यकीनन मेरी एक मनुहार पर वो सहर्ष अपना कौमार्य मुझे सौम्प देती। पर ज़रा सोचिये इतनी जल्दबाजी में क्या उसे कोई आनन्द की अनुभूति हो पाती ?

पता नहीं उसने अपने प्रथम शारीरिक मिलन (सम्भोग) को लेकर कितने हसीन ख्वाब देखे होंगे ? क्या वो इतनी जल्दबाजी में पूरे हो पाते ? मैं चाहता था वो जिन्दगी के इस चिर प्रतीक्षित पल का इतना आनन्दमयी ढंग भोग करे कि उसे यह लम्हा ताउम्र एक रोमांच में डुबोये रखे।

निश्चित रूप से मैं यह चाहता था कि उसे अपने इस प्रथम मिलन और अपने कौमार्य खोने के ऊपर कोई शंका, गम, पश्चाताप, ग्लानि या अपराधबोध ना हो। उसके मन में रत्ती भर भी यह संभावना नहीं रहे कि उसके साथ कहीं कोई छल किया गया है। मैं तो चाहता हूँ वह भी इस नैसर्गिक क्रिया का उतना ही आनन्द उठाये जितना इस कायनात (सृष्टि) के बनने के बाद एक प्रेमी और प्रेमिका, एक पति और पत्नी और एक नर और मादा उठाते आ रहे हैं।

दोस्तो ! सम्भोग या चुदाई तो प्रेम की अंतिम अभिव्यक्ति है ? उसके बाद तो सब कुछ एक नित्यकर्म बन जाता है। और इस अंतिम सोपान से पहले अभी तो बहुत से सोपान (सबक) बाकी रह गए हैं। अभी तो केवल तीन सबक ही पूरे हुए हैं अभी तो लिंग और योनि दर्शन-चूषण बाकी हैं और बकोल मधुर प्रेम मिलन और स्वर्ग के दूसरे द्वार का उदघाटन समारोह को तो बाद में संपन्न किया जाता है ना ?

तो आइए अब लिंग दर्शन और वीर्यपान अभियान का अगला सोपान शुरू करते हैं.

सयाने कहते हैं जीवन, मरण और परण भगवान् के हाथ होते हैं। पर साली यह जिन्दगी भी झांटों की तरह उलझी ही रहती है। साले इन पब्लिक स्कूल वालों के नाटक भी बड़े अजीब होते हैं। इनको तो बस छुट्टी का बहाना चाहिए होता है। अब मधुर के स्कूल के प्रिंसिपल

की वृद्ध माता के देहांत का स्कूल के बच्चों की छुट्टी से क्या सम्बन्ध है ? स्कूल ने एक दिन की छुट्टी कर दी थी और अगले दिन रविवार था।
गौरी से 2 दिन बात करना संभव ही नहीं हो पाया। मैंने महसूस किया गौरी कुछ चुप-चुप सी है और मुझ से नज़रें भी नहीं मिला रही है।

आज लिंग देव का दिन है। मेरा मतलब सोमवार है। अब आप इसे श्रद्धा कहें, आस्था कहें, भक्ति कहें या फिर मजबूरी कहें मैं भी सावन में सोमवार का व्रत जरूर रखता हूँ। और इस बार तो मधुर ने विशेष रूप से सोमवार के व्रत रखने के लिए मुझे कहा भी है। अब भला मधुर की हुक्मउदूली (अवज्ञा) करने की हिम्मत और जोखिम मैं कैसे उठा सकता हूँ ?
एक और भी बात है … क्या पता इस बहाने लिंग देव प्रसन्न हो जाएँ और मुश्किल घड़ी में कभी कोई सहायता ही कर दें ?

मैं आज लिंग देव के दर्शन करने तो नहीं गया पर स्नान के बाद घर में बने मंदिर में ही हाथ जोड़ लिए थे।

गौरी आज चाय के बजाय एक गिलास में गर्म दूध और केले ले आई थी। मैंने महसूस किया गौरी आज भी कुछ गंभीर सी लग रही है।
हे लिंग देव !!! कहीं फिर से लौड़े तो नहीं लगा दोगे ?

मैं उससे बात करने का कोई उपयुक्त अवसर ढूंढ ही रहा था।
वह दूध का गिलास और प्लेट में रखे दो केले टेबल पर रखकर मुड़ने ही वाली थी तो मैंने उससे पूछा- गौरी ! आज चाय नहीं बनाई क्या ?
“आज सोमवाल है.”
“ओह… तुमने चाय पी या नहीं ?”
“किच्च”
“क्यों ? तुमने क्यों नहीं पी ?”

“मैंने भी व्लत (व्रत) लखा है।”

“अच्छा बैठो तो सही ?”
गौरी बिना कुछ बोले मुंह सा फुलाए पास वाले सोफे पर बैठ गई। माहौल थोड़ा संजीदा (गंभीर) सा लग रहा था।
“गौरी क्या बात है ? आज तुम उदास सी लग रही हो ?”
“किच्च” गौरी ने ना बोलने के चिर परिचित अंदाज़ में अपनी मुंडी हिलाई अलबत्ता उसने अपनी मुंडी झुकाए ही रखी।

“गौरी जरूर कोई बात तो है। अब अगर तुम इस तरह उदास रहोगी या बात नहीं करोगी तो मेरा भी मन ऑफिस में या किसी भी काम में नहीं मिलेगा। प्लीज बताओ ना ?”
“आपने मेले साथ चीटिंग ती ?”
“अरे … कब ?” मैंने हैरानी से उसकी ओर देखा।
“वो पलसों ?”

लग गए लौड़े !!! भेनचोद ये किस्मत भी लौड़े हाथ में ही लिए फिरती है। इतनी मुश्किल से चिड़िया जाल में फंसी थी अब लगता है उड़न छू हो जायेगी और मैं जिन्दगीभर इसकी याद में मुट्ठ मारता रह जाउंगा। अब किसी तरह हाथ में आई मछली को फिसलने से बचाना जरूरी था। अब तो किसी भी तरह स्थिति को संभालने के लिए आख़िरी कोशिश करना लाजमी था।

मैंने अपना गला खंखारते हुए कहा- ओह … वो … दरअसल गौरी मैं थोड़ा भावनाओं में बह गया था। मैं सच कहता हूँ गौरी तुम्हारे बदन की खूबसूरती देख कर मैं अपने होश ही खो बैठा था ? पर देखो मैंने कोई बद्तमीजी (अभद्रता) तो की ही नहीं थी ?
“आप तो बस मेले द्दू ही देखते लहे ? तिल ते बाले में तो बताया ही नहीं ?”
“ओह… स… सॉरी !”

हे भगवान् … मैं भी काहे का प्रेमगुरु हूँ ? लगता है मैं तो निरा नंदलाल या चिड़ीमार ही हूँ। इन 2-3 मिनटों में मैंने पता नहीं क्या-क्या बुरा सोच लिया था। मेरा तो जैसे अपने ऊपर से आत्मविश्वास ही उठ गया था। मैंने बहुत सी लड़कियों और भाभियों को बड़े आराम से अपने जाल में फंसाकर उसके साथ सब कुछ मनचाहा कर लिया था पर अब तो मुझे तो डर लग रहा था कि मेरे सपनों का महल एक ही झटके में तबाह होने वाला है। बुजुर्ग और सयाने लोग सच कहते हैं कि औरत के मन की बातों को तो भगवान् भी नहीं समझ सकता तो मेरी क्या बिसात थी।

ओह… हे लिंग देव ! तेरा लाख-लाख शुक्र है लौड़े लगने से बचा लिया। आज तो मैं सच में ऑफिस में ना तो समोसे ही खाऊँगा और ना ही कोई और चीज … और तुम्हारी कसम चाय भी नहीं पीऊँगा। प्रॉमिस !!!

“अरे … वो दरअसल… तिल के बारे में बताने का समय ही कहाँ मिला ? और फिर तुम भी तो बाथरूम में भाग गई थी ? किसे बताता ? बोलो ?” मैंने उसे समझाते हुए कहा।
“पता है मेले तपड़े खलाब हो गए और मेला तो सु-सु निकलते-निकलते बचा.”

ओह … तो यह बात थी। मेरी तोते जान तो तिल का रहस्य ना बताने पर गुस्सा हो रही है। अब मेरी जान में जान आई। मैंने मन में कहा ‘मेरी जान अब तो मैं तिल क्या तुम्हारे एक-एक रोम का भी हिसाब और रहस्य बता दूंगा।’

आज तो गौरी सु-सु का नाम लेते हुए ज़रा भी नहीं शरमाई थी। शुरू-शुरू में मैं सोचता था इतना हसीन मुजस्समा अपना कौमार्य कहाँ बचा पाया होगा पर जिस प्रकार आज गौरी ने उस दिन अपना सु-सु के निकल जाने की बात की थी मुझे लगता है यह उसके जीवन का पहला ओर्गस्म (लैंगिक चरमसुख की प्राप्ति) था। और इसी ख्याल से मेरे लंड ने एक बार फिर से ठुमके लगाना शुरू कर दिया था।

“अरे तसल्ली से बैठो तो सही, सब विस्तार से बताता हूँ।”
गौरी पास वाले सोफे पर बैठ गई। मैंने आज उसे अपने बगल में सोफे पर बैठाने की जिद नहीं की।

अब मैंने तिल के रहस्य का वर्णन करना शुरू किया :
“देखो गौरी ! वैसे तो हमारे शरीर पर बहुत सी जगहों पर तिल हो सकते हैं पर कुछ ख़ास जगहों पर अगर तिल हों तो उनका ख़ास अर्थ और महत्व होता है।”
“हम्म…”
“जिन स्त्री जातकों की छाती पर दायें स्तन पर तिल होता है वो बड़ी भाग्यशाली होती हैं। उनको पुत्र योग होता है। वे असाधारण रूप से बहुत सुन्दर और कामुक भी होती हैं और जिन स्त्री जातकों के बाएं स्तन पर तिल होता है उनको कन्या होने का प्रबल योग होता है। और हाँ एक और ख़ास बात है ?” मैंने गौरी की उत्सुकता बढाने के लिए अपनी बात बीच में छोड़ कर एक लंबा सांस लिया।

“त्या ?” गौरी ने बैचेनी से अपना पहलू बदला।
“और जानती हो जिस लड़की या स्त्री के दोनों उरोजों के बीच की घाटी थोड़ी चौड़ी होती है यानी दोनों स्तनों की दूरी ज्यादा होती है उनको एक बहुत बड़ी सौगात मिलती है ?”
“अच्छा ? वो त्या ?” अब तो गौरी और भी अधिक उत्सुक नज़र आने लगी थी।
“दोनों उरोजों के चौड़ी घाटी के साथ दोनों कंगूरे अगर सामने के बजाय थोड़ा एक दूसरे के विपरीत दिशा में दिखाई देते हों तो उन स्त्री जातकों को एक साथ दो संतानों यानी जुड़वां बच्चों का योग होता है.”

“मैं समझी नहीं ?” शायद यह बात गौरी के पल्ले नहीं पड़ी थी।
“ओह … तुम इधर मेरे पास आकर बैठो मैं समझाता हूँ।”
गौरी कुछ सोचते हुए मेरी बगल में आकर बैठ गई।

“तुमने देखा होगा कुछ लड़कियों के दोनों बूब्स ऐसे लगते हैं जैसे एक दूसरे के बिलकुल पास और चिपके हुए हों।”
“हओ”
“और उन दोनों के बीच एक गहरी खाई सी (क्लीवेज) भी नज़र आती रहती है ?”
“हओ… मेली भाभी के दूद्दू भी ऐसे ही हैं।”
“अच्छा ?”
“ऐसा होने से त्या होता है ?”
“ऐसी स्त्रियों की संतान कुछ कमजोर पैदा होती हैं। उनको माँ के दूध की ज्यादा आवश्यक्ता होती हैं तो प्रकृति या भगवान् उनके स्तनों को थोड़ा बड़ा और पास-पास बनाता है ताकि बच्चे को दोनों स्तनों का दूध आसानी से मिल सके।”

अब पता नहीं गौरी को मेरी बात समझ आई या नहीं या उसे विश्वास हुआ या नहीं वह तो बस गूंगी गुड़िया की तरह मेरी ओर देखती रही।

“और जिन स्त्रियों के दूद्दू थोड़ी दूरी पर होते हैं ? पता है उनके लिए भगवान् ने क्या व्यवस्था की है ?” इस बार मैंने स्तनों या उरोजों के स्थान पर दूद्दू शब्द का प्रयोग जानकार किया था ताकि गौरी अपने बारे में अनुमान लगा सके।

अब गौरी अपने दुद्दुओं की ओर गौर से देखकर कुछ अनुमान सा लगाने की कोशिश करती लग रही थी। गौरी के दूद्दू भी थोड़े दूर-दूर थे। उनका आकार बहुत बड़ा तो नहीं था पर उनका बेस जरूर नारंगियों जैसा था पर ऊपर से थोड़े उठे हुए से थे और तीखे कंगूरे बगलों की ओर थोड़े मुड़े हुए थे। और उरोजों के बीच की घाटी चौड़ी सी लग रही थी।
शायद गौरी अब कुछ सोचने लगी थी।

“गौरी तुम्हारे दूद्दू भी तो थोड़े दूर-दूर हैं ना ?”
“हओ…” कहते हुए गौरी कुछ शरमा सा गई।

“गौरी मुझे लगता है तुम्हारे भी जुड़वां बच्चे होंगे।” कहकर मैं जोर जोर से हंसने लगा था।

गौरी ने इस बार ‘हट’ नहीं कहा। अलबत्ता वह अपनी मुंडी नीचे किये कुछ सोच जरूर रही थी और मंद मंद मुस्कुरा भी रही थी।
“गौरी अगर जुड़वा बच्चे हो गए तो मज़ा ही आ जाएगा ? कितने प्यारे और खूबसूरत बच्चे होंगे ?”
“हट !!!” गौरी तो शरमाकर इस समय लाजवंती ही बन गई थी।
“तुम्हें विश्वास नहीं हो रहा ना ?”

“पल मेली तो अभी शादी ही नहीं हुई मेले बच्चे खां से होंगे ?” साली दिखने में लोल लगती है पर कई बार मुझे भी निरुत्तर कर देती है।
“तो क्या हुआ ? कर लो शादी ?”
“किच्च ! मुझे अभी शादी-वादी नहीं तलानी। दीदी बोलती है पहले पढ़ लिख तल तुछ बन जाओ।”

“अरे गौरी !”
“हओ ?”
“यार बातों-बातों में यह दूद्दू ठंडा हो गया। एक काम करो इसे थोड़ा गर्म कर लाओ फिर हम दोनों आधा-आधा दूद्दू पीते हैं ? तुमने भी तो व्रत कर रखा है ?”
अब यह तो पता नहीं कि गौरी दूद्दू का असली मतलब समझी या नहीं पर वह रसोई में जाते समय मुस्कुरा जरूर रही थी।

गौरी थोड़ी देर में दो गिलासों में इलायची डला गर्म दूध ले आई और फिर से बगल वाले सोफे पर बैठ गई। अब मैंने प्लेट में रखे दोनों केले उठाये। मैंने देखा दोनों केलों का सिरा आपस में जुड़ा हुआ था।
“देखो गौरी यह दोनों केले भी आपस में जुड़वां लगते हैं ?” मैंने हँसते हुए उन केलों को

गौरी को दिखाया तो वह भी हंसने लगी।
“फिर मैंने दोनों केलों को अलग-अलग करके एक केला गौरी की ओर बढ़ाया। गौरी ने थोड़ा झिझकते हुए केला ले लिया।

मैंने एक केले को आधा छीला और फिर उसे मुंह में लेकर पहले तो चूसते हुए 2-3 बार अन्दर-बाहर किया और फिर एक छोटा सा टुकड़ा दांतों से काटकर खाने लगा। गौरी मेरी इन सब हरकतों को ध्यान से देख रही थी। वह कुछ बोली तो नहीं पर मंद-मंद मुस्कुरा जरूर रही थी।

“गौरी मैं बचपन में वो लम्बी वाली चूसकी (आइसक्रीम) बड़े मजे से चूस-चूस कर खाया करता था।”
“बचपन में तो सभी ऐसे ही तलते हैं।”
“तुम भी ऐसे ही चूसती हो क्या ? म … मेरा मतलब चूसती थी क्या ?”
“हओ… बचपन में तो मुझे भी बड़ा मज़ा आता था।”
“अब नहीं चूसती क्या ?”
“किच्च”

“इस केले को आइसक्रीम समझकर चूस कर देखो बड़ा मज़ा आएगा ?”
“हट !”
और फिर हम दोनों ही हंसने लगे।
“गौरी एक बात पूछूं ?”
“हओ”
“गौरी मान लो तुम्हारे जुड़वां बच्चे हो जाएँ तो क्या तुम उसमें से एक बच्चा हमें गोद दे दोगी ?”
मेरा अंदाज़ा था गौरी शर्मा जायेगी और फिर ‘हट’ बोलेगी पर गौरी तो खिलखिला कर हंस

पड़ी और फिर बोली- दीदी भी ऐसा ही बोलती हैं।

“क्या … मतलब ? कब ? तुमने मधुर से भी इस बारे में बात की थी क्या ?”
“नहीं एतबाल दीदी ने मेला हाथ देखकर बताया था.” गौरी ने शर्माते हुए अपनी मुंडी फिर नीचे कर ली।
“फिर तुमने क्या जवाब दिया ?”
“मैंने बोला कि दीदी आप चाहो तो दोनों ही रख लेना। सब कुछ आपका ही तो है। मेरे और मेरे परिवार पर आपके कितने अहसान हैं मैं तो आपके लिए अपनी जान भी दे सकती हूँ।”

ओहो … तो गौरी को यह सारा ज्ञान हमारी हनी डार्लिंग (मधुर) का दिया हुआ लगता है। तभी मैं सोचूं उस दिन गौरी ने अपना हाथ देखने की बात मुझ से क्यों की थी ? शायद वह इन बातों को कन्फर्म करना चाहती होगी। मुझे डर लगा कहीं इस बावली सियार ने वो भूतनी या चुड़ैल वाली बात तो मधुर से नहीं पूछ ली होगी ?
“अरे कहीं तुमने मधुर से वो भूतनी वाली बात तो नहीं पूछ ली ?”
“किच्च …” गौरी ने मेरी ओर संदेहपूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा “दीदी से तो नहीं पूछा पल… तहीं आपने मुझे उल्लू तो नहीं बनाया था ?”
“अरे नहीं… यार… इसमें उल्लू बनाने वाली कौन सी बात है ? मैंने कई किताबों में इसके बारे में पढ़ा है।”
“मैंने इसते बाले में यू-टचूब पल सल्च तिया था। उसमें तो इसे सुपलस्टेशन… अंधों… ता विश्वास जैसा तुछ बताया ? ये अंधों ता विश्वास त्या होता है मेली समझ में नहीं आया ?”

एक तो यह साली मधुर किसी दिन मुझे मरवा ही देगी। इस लोल को अब यू-टचूब चलाना और सिखा दिया। गौरी शायद सुपरस्टिशन (अंधविश्वास) की बात कर रही थी। मुझे तो कोई जवाब सूझ ही नहीं रहा था।

“अरे नहीं … दरअसल अंधे व्यक्ति देख नहीं सकते तो उनको भूतनी या चुड़ैल पर विश्वास नहीं होता होगा इसलिए ऐसा बताया होगा ?” मैंने गोलमोल सा जवाब देकर उसे समझाने की कोशिश की। अब पता नहीं मेरी बातों पर उसे विश्वास हुआ या नहीं भगवान जाने पर इतना तो तय था कि अब उसके मन की शंकाएं कुछ हद तक दूर जरूर हो गई थी।

बातों-बातों समय का पता ही नहीं चला 9:30 हो गए थे। गौरी बर्तन उठाकर रसोई में चली गई और मैं दफ्तर के लिए भागा।
जय हो लिंग देव !!!

कहानी जारी रहेगी.
premguru2u@gmail.com

Other stories you may be interested in

तीन पत्ती गुलाब-12

“जिन खूबसूरत लड़कियों की ठोड़ी या होंठों के ऊपर तिल होता है उनके गुप्तांगों के आस-पास या जांघ पर भी तिल जरूर होता है।” मैंने हंसते हुए कहा। कोई और मौक़ा होता तो गौरी जरूर शर्मा कर रसोई या अपने […]
Full Story >>>

चाची का नंगा बदन और मेरी वासना

हैलो फ्रेंड्स, मैं हरियाणा के करनाल से जुड़ा हुआ हूँ. ये मेरी पहली सेक्स स्टोरी है. मैं कोई लेखक तो हूँ नहीं, इसलिए गलतियां होना स्वाभाविक है. यदि आपको इसमें कोई ग़लती दिखे, तो मुझे माफ कर देना. यह कहानी […]
Full Story >>>

अमीरजादी ने घर लेजाकर चुदवा लिया

नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम गोल्डी (बदला हुआ) है, मैं सोनीपत हरियाणा का रहने वाला हूँ. मैं दिखने में ठीक-ठाक हूँ … कद 6 फुट 2 इंच का है और 22 साल का मस्त लड़का हूँ. मुझे जिम जाने का बहुत […]
Full Story >>>

तीन पत्ती गुलाब-11

आज भी मैं थोड़ा जल्दी उठ गया था। मधुर ने बेडरूम में ही चाय पकड़ा दी थी। आज मैंने कई दिनों बाद पप्पू का मुंडन किया था और तेल लगाकर मालिश भी की थी। बाथरूम से फारिग होकर जब तक […]
Full Story >>>

माँ बेटी दोनों चुद गईं

दोस्तो, ये कहानी मुझे मेरी एक परिचिता ने मुझे भेजी थी. आप उसकी ही जुबान में इस सच्ची कहानी का मजा लीजिएगा. मैं एक शादीशुदा खातून हूँ. मेरी उम्र इस समय करीब 52 साल है. मेरा एक ही बेटा है, […]
Full Story >>>